

माननीय अध्यक्ष श्री,

- हुं आपना मारङ्गते गृहना तमाम सल्योने जशाववा मागुं छुं के, "विकसित गुजरात थी विकसित भारत" अने "आत्मनिर्भर गुजरात थी आत्मनिर्भर भारत" ना संकल्पने पूरो करवा माटे आप सौ अमारी आ

उद्योग अने भाषा विभागनी मांगणीओ क्रम - ४६ अने ५०,

श्रम, कौशल्य विकास अने रोजगार विभागनी मांगणी -५७ अने

महेसूल विभागनी मांगणीओ क्रम - ७८ अने ७९

ने सर्वानुमते मंजूरी आपशो अने भारतने विश्वनी महासत्ता बनाववा गुजरातना योगदानने समर्थन आपशो.

\*\*\*